



एपीजे अब्दुल कलाम

# टर्निंग प्वाइंट्स

सुनीलित्यो-अस एकर सफर



'विमल ओकर सफर' का अन्ततः भाग

“यह पुस्तक एक सीधे-सादे, समर्पित, धर्मनिरपेक्ष, स्वनिर्मित और स्वप्रदर्शी इनसान के संस्मरणों की कथा है जो एक स्तर पर बिलकुल बच्चों की तरह मासूम और भोला है। जब डॉ. कलाम को राष्ट्रपति बनाया गया तो इस पर कई लोग काफी हैरान थे लेकिन राष्ट्रपति के पद पर जो कार्य उन्होंने किये, उससे उनको जनता से भरपूर प्रशंसा और प्यार मिला और शायद इसीलिए आज भी इन्हें 'पीपल्स प्रेज़िडेंट' कहा जाता है। 'टर्निंग प्वाइंट्स' दिल से लिखी गई है और पढ़ने में सरल और रोचक है। इसे पढ़कर यह बात समझ में आती है कि एक ईमानदार और चिन्तनशील राष्ट्रपति देश के लिए क्या कुछ कर सकता है!”

-द हिन्दू, 24 जुलाई 2012

“पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के संस्मरणों की रोचक पुस्तक 'टर्निंग प्वाइंट्स' कुछ पक्षपाती मुद्दों को सामने लाती है। यह पुस्तक इस बात को सिद्ध करती है कि वास्तव में राष्ट्रपति का कितना महत्त्व है और राष्ट्रपति द्वारा लिए गये निर्णय राजनीतिक ही होते हैं। एक लोकप्रिय धारणा बनी हुई है कि डॉ. कलाम एक गैर-राजनीतिक राष्ट्रपति थे, यह पुस्तक इस धारणा को दूर करती है।

हमारे देश में राजनीतिक नेताओं की अपने संस्मरण लिखने की परंपरा नहीं है, इसलिए इस पुस्तक का विशेष स्वागत है। कुछ विवादास्पद तथ्यों पर सचाई सामने रखते हुए यह पुस्तक इस बात का प्रमाण है कि डॉ. कलाम के राष्ट्रपति पद का कार्यकाल एक महत्त्वपूर्ण विरासत है और यह देश की राजनीति और इतिहास को समझने का अवसर देती है।”

-इंडियन एक्सप्रेस, 2 जुलाई 2012

टर्निंग प्वाँइंट्स  
चुनौतियों-भरा एक सफ़र

ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



अनुवाद  
अशोक गुप्ता



मूल्य : ₹ 225

ISBN : 9789350641002

प्रथम संस्करण : 2012, षष्ठम् आवृत्ति : 2016

© ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 2012

हिन्दी अनुवाद © राजपाल एण्ड सन्ज़

TURNING POINTS by A.P.J. Abdul Kalam  
(Hindi edition of Turning Points)

(Published in arrangement with HarperCollins Publishers India)

आवरण सौजन्य : अमृता चक्रवर्ती

मुद्रक : जी. एच. प्रिंट्स, दिल्ली

### राजपाल एण्ड सन्ज़

1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006

फोन: 011-23869812, 23865483,

फैक्स : 011-23867791

website : [www.rajpalpublishing.com](http://www.rajpalpublishing.com)

e-mail : [sales@rajpalpublishing.com](mailto:sales@rajpalpublishing.com)

[www.facebook.com/rajpalandsons](http://www.facebook.com/rajpalandsons)

## क्रम

आमुख

आभार

1. मैं भारत का गीत कब गा सकता हूँ?
2. अन्ना विश्वविद्यालय में मेरा नौवां भाषण
3. मेरे जीवन के सात निर्णायक मोड़
4. मिलनसार राष्ट्रपति
5. मैं राष्ट्र को क्या दे सकता हूँ?
6. जो दूसरों से सीखा
7. प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बनने की ओर
8. दीपक और पतंगा
9. मेरी गुजरात यात्रा
10. वसुधैव कुटुम्बकम्
11. भारत के हृदय का कायाकल्प
12. उद्यान में
13. विवादास्पद निर्णय
14. राष्ट्रपतित्व के बाद

उपसंहार

और अंत में

परिशिष्ट-I : साक्षात्कार

परिशिष्ट-II : लक्ष्य-अभियान कार्यान्वित करना

## आमुख

मेरी पुस्तक विंग्स ऑफ फायर ने मेरे जीवन के 1992 तक के समय को सामने रखा था। यह पुस्तक 1999 में प्रकाशित हुई थी और पाठकों के बीच इसका भव्य स्वागत हुआ। इसकी दस लाख से ज्यादा प्रतियाँ बिकीं। इस से भी कहीं ज्यादा खुशी की बात यह है कि इस पुस्तक ने हज़ारों लोगों की सोच को एक नई राह दी और वे अपनी ज़िंदगी को बेहतर बना सके।

यह पुस्तक, टर्निंग प्वाइंट्स लिखते समय मेरे मन में यह सवाल उठ रहा था कि मैं यह पुस्तक क्यों लिख रहा हूँ। कहा जा सकता है कि मेरी इस कहानी में बहुत-से भारतीय लोगों के जीवन-सरोकार, उनकी उत्सुकता तथा आकांक्षा की तस्वीर झलकती है। उन सब की तरह, मेरी ज़िंदगी की शुरुआत भी बहुत निचले स्तर से हुई थी। मैंने अपनी मेरी पहली नौकरी 'सीनियर साइंटिफिक असिस्टेंट' के तौर पर शुरू की। धीरे-धीरे, मुझे बड़ी ज़िम्मेदारियाँ मिलती गईं और अंततः एक दिन मैंने भारत के राष्ट्रपति का कार्यभार संभाल लिया। निश्चित रूप से, उसके बाद के एक दशक में ऐसा बहुत कुछ हुआ जो बताया जाना बाकी है। कहा जा सकता है कि वह एक गहरे अनुभव का प्रसंग है।

खैर, मेरे लिये इस पुस्तक, टर्निंग प्वाइंट्स को लिखने के कारण ज़रा अलग हैं। मेरी पहली पुस्तक विंग्स ऑफ फायर ने जो उत्साहजनक असर दिखाया उस से मुझे लगा कि अगर उसी तरह यह पुस्तक भी कुछ लोगों को लाभ पहुंचा सके, तो इसका लिखना सार्थक हो जाएगा। सच पूछा जाए, तो अगर यह पुस्तक केवल एक व्यक्ति या केवल एक परिवार की ज़िंदगी को भी बदल कर बेहतर कर सकेगी, तो मुझे संतोष होगा। इस आशा के साथ प्रिय पाठक, यह पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत है।

**-ए. पी. जे. अब्दुल कलाम**

30 मई, 2012  
नई दिल्ली

## आभार

प्रिय मित्रो, अपनी अस्सी बरस की उम्र तक पहुंचते, मैंने अपनी यह इक्कीसवीं पुस्तक, टर्निंग प्वाइंट्स पूरी की है। इसकी शुरुआत ऐसे हुई : एक सुबह मैं अपने नई दिल्ली के आवास 10, राजाजी मार्ग पर, अपने सचिव शेरिडोन के साथ बैठा अपनी पुरानी डायरियां देख रहा था, तभी मैंने देखा कि उनमें सात ऐसे चुनौती भरे मोड़ देखे जा सकते हैं, जिन्होंने मेरी ज़िंदगी को कामयाबी की राह दिखाई। अगर राष्ट्रपति का पद छोड़ने के बाद का समय भी जोड़ें, तो आप इसे आठवाँ मोड़ भी गिन सकते हैं।

मैं उन लोगों के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने प्यार और अपनेपन से मेरी ज़िंदगी को अब तक भरपूर रखा। इसी तरह मैं उनका भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने अपनी खुशियों और मुश्किलों को मुझसे साझा किया। मैं इस कृतज्ञता ज्ञापन में अपने अनगिनत पाठकों को भी शामिल करना चाहता हूँ। मेरी दो पुस्तकों ने मुझे दस लाख से ज़्यादा पाठक दिए, और दूसरी पांच पुस्तकें एक लाख पाठकों तक पहुंचीं। मैं विशेष रूप से मेजर जनरल आर. स्वामीनाथन का हृदय से धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। वह मेरे साथ, मेरे जीवन के हर सफल और कुछ असफल दौर में भी, तीस साल से ज्यादा समय तक साथ रहे। वह मेरे दोस्त, गुरु और मार्गदर्शक सब कुछ हैं। मेरी इस पुस्तक टर्निंग प्वाइंट्स के तैयार होने में इनका बड़ा योगदान यह रहा कि इन्होंने इसके सभी ब्यौरों की बहुत बारीकी से जांच की और अपनी तसल्ली के बाद ही पुस्तक में आने दिया।

इस पुस्तक की पांडुलिपि बिना धनश्याम शर्मा तथा विशाल रस्तोगी के अथक प्रयास के पूरी नहीं हो सकती थी। मैं नारायणमूर्ति और वी. पोनराज द्वारा दिए गये सुझावों को भी महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। मैं हार्परकॉलिस के कृशन चोपड़ा का, उनके सार्थक योगदान के लिये आभार प्रकट करता हूँ। उन्होंने मेरी अंग्रेजी पांडुलिपि को सुगठित करने और उसके संपादन में जो काम किया, वह प्रशंसनीय है। मैं राजिंदर गंजू को भी धन्यवाद देता हूँ, उन्होंने जितने कम समय में पूरी पांडुलिपि को फिर से टाइप किया, वह प्रशंसनीय है। उसके बाद ही पुस्तक प्रेस में जा सकी।

## मैं भारत का गीत कब गा सकता हूँ?

प्रकृति को प्यार करो और उसके आशीष का सम्मान करो  
तभी तुम देवत्व को देख पाओगे

वह जुलाई 2007 की 24 तारीख थी और मेरे राष्ट्रपति पद पर होने का अंतिम दिन। बहुत-से काम किये जाने थे। सुबह मैं अपने निजी कामों में व्यस्त रहा। बाद में दोपहर 3.25 बजे से टेलिविजन चैनल सी.एन.एन. आई.बी.एन. (CNN-IBN) के राजदीप सरदेसाई और दिलीप वेंकटरामन से संक्षिप्त बातचीत, उसके बाद छत्तीसगढ़ के राज्यपाल ई. एस. एल. नरसिंहन के साथ भेंट का कार्यक्रम था। उसके बाद मुझे उत्तराखंड के स्वास्थ्य, जनकल्याण, विज्ञान और टेक्नोलॉजी मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' से मिलना था। मुझे हिन्दू कॉलेज, दिल्ली की छात्रा करिश्मा थंकप्पन से भी मिलना था जो अपने माता-पिता और पांच साथियों के साथ आ रही थीं। शाम चार बजे विदेश मंत्रालय के शिष्टाचार प्रमुख सुनील लाल, उनकी पत्नी गीतांजलि और बेटी निकिता से भेंट करनी थी। इसी तरह कई तरह की विदाई भेंटों का कार्यक्रम रात आठ बजे तक चलता रहा। उसके बाद नवनिर्वाचित राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और उनके मंत्रिमंडल को मैंने रात्रि-भोज पर आमंत्रित कर रखा था।

विदाई के समय की मुलाकातों, मीटिंग और मित्रों से बातचीत के दौरान मेरा थोड़ा निजी सामान दो सूटकेसों में रख लिया गया। यह मैंने पहले ही कह दिया था कि बस इतना कुल ही मैं अपने साथ ले जाऊँगा। बहुत कुछ वह ही था जो लोगों के दिमाग में था लेकिन कहा नहीं गया था। जो कोई भी मुझसे मिला या जिसकी भी बात मुझसे हुई, उसके मन में बस एक ही प्रश्न था, 'मैं अब क्या करूँगा? क्या मैंने कुछ सोच रखा है? क्या मैं फिर से अध्यापन के काम में लौट जाऊँगा? या अब मैं सक्रिय जन-जीवन से मुक्त हो जाऊँगा?' जो लोग मुझे जानते हैं वह समझ सकते हैं कि यह सक्रिय जीवन से मुक्त हो जाने वाली संभावना मेरे साथ बेमानी है। तब तक, राष्ट्रपति भवन में बिताये पांच बरस मेरे मन में एकदम